मूल्यांकित अनुप्रमाणित

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-14

(द्वितीय प्रश्न-पत्र संपूर्ण पाठ्यक्रम)

DTVF / OPT-21 M1-HL14

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): Ravi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address):

परीक्षा केंद्र एवं दिनांक (Test Centre and Date): Delhi, 29/12/2021

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2021] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2021]:

6	6	2	4	5	8	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 156

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)
E-51 वि

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)
R-11

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

अर्थ काफी अच्छे हैं।
पाठ्यक्रम पर पकड़ सशक्त है।
विश्लेषण-क्षमता प्रशंसनीय है।
भूमिका व निष्कर्ष शानदार है।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण प्रभावशाली है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि॥

सन्दर्भ : प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि 'बिहारीलाल' की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहे में बिहारी अपनी स्वाभाविक शृंगार रचना के बजाय भक्ति भाव से भगवान को पुकार रहे हैं व अपने उद्धार की कामना कर रहे हैं।

व्याख्या : बिहारी भगवान श्रीकृष्ण को उलाहना देते हुए कहते हैं कि हे ईश्वर! लगता है आपने हाथी के उद्धार के उपरांत अन्य किसी भक्त का उद्धार करना छोड़ दिया है। इसी कारण से आपने मेरी पुकार सुनना बंद कर दिया है और मुझे त्याग दिया है। लगता है कि मेरी सभी गुहार और कामनाएँ अब

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फीकी है क्योंकि आप मेरे प्रति उदासीन हो गये हैं।

भाव पक्ष :- (i) प्रस्तुत दोहा पारंपरिक श्रृंगार बोध के बजाय भक्ति बोध से प्रेरित है।

(ii) भगवान को उलाहना देने का भाव प्रबल हुआ है।

(iii) कबीरदास ने भी इसी प्रकार ईश्वर को उलाहना प्रेषित किया है -

"मूँवा पीछे देहुगे
सो दरसन किहिं काम।"

शिल्प पक्ष

(i) भाषा - ब्रज भाषा

(ii) छंद - दोहा

(iii) अलंकार - अनुप्रास अलंकार '-बिरद बरक बरनु'

V. Good

6½ / 10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

प्रस्तुत पद्यांश कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि 'सूरदास' के काव्य संग्रह 'भ्रमरगीतसार' से उद्धृत है, जिसका संकलन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में उद्धव के आने पर गोपियों की पीड़ा के साथ-साथ उद्धव, मथुरा आदि पर गोपियों द्वारा व्यंग्य करने का वर्णन सूर ने किया है।

व्याख्या :- सूर की गोपियाँ कहती हैं कि उद्धव आप कठोर बातें क्यों कर रहे हैं। क्या यह मथुरा में रहने का परिणाम है? वह मथुरा तो काजल की कोठरी के समान है जहाँ से कोई भी आता है वह काला ही होता है। मथुरा से आने के कारण उद्धव, सुफलक के पुत्र और कृष्ण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

सभी काले हो गये हैं। कृष्ण की छवि तो चमकदार है और इनके नेत्र कमलों की भाँति है। साथ ही कृष्ण की लीलाओं के कारण ही यमुना का रंग भी काला हो गया है।

सौंदर्य पक्ष (i) सूरदास ने विरह वियोग की अत्यन्त मार्मिक व्यंजना की है।

(ii) गोपियों का उपालंभ, वक्रता व वाग्विदग्धता अत्यन्त चातुर्यपूर्ण है।

(iii) नगरीय जीवन का उपहास उड़ाया गया है।

शिल्प सौन्दर्य

(i) भाषा मधुर ब्रज है।

(ii) अनुप्रास की छटा दर्शनीय है।

(iii) 'छंदों के स्तर पर सूर के लीलापद हैं।"

Good A

6

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
तरिवर झरहि झरहि बन ढाखा। भइ ओनंत फूलि फरि साखा।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। सो कहँ भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत-मरत मोहि रोष न आवा।।
राति-दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।।

प्रस्तुत दोहा व चौपाई भक्तिकाल के प्रसिद्ध सूफी कवि 'मलिक मोहम्मद जायसी' के प्रबंधकाव्य पद्मावत के 'नागमती विरोग' खण्ड से ली गई है।

प्रसंग :- पद्यांश में फाल्गुन माह में शीत ऋतु में नागमती की विरह दशा का मार्मिक वर्णन किया गया है।

व्याख्या :- नागमती कहती हैं कि फाल्गुन माह में शीतल पवनें बहने से शीत ऋतु का प्रकोप चार गुना अधिक बढ़ गया है। इसी के कारण मेरा तन विरह की अग्नि से जल रहा है। इस ऋतु में तो ढाक के तरु के पत्ते भी झड़कर नवीन आने शुरू हो गये हैं, किंतु जिस प्रकार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वनस्पति उल्लास से भरी हुई है, उसके विपरीत मैं दुःख की ज्वाला से घिरी हुई हूँ। फाल्गुन में सभी सखियाँ चाँचरी खेल रही हैं और होली का उत्सव मना रही हैं किंतु मैं इसी चिंता में हूँ कि मेरे प्रिय कब आयेंगे। नागमती पवन से प्रार्थना करती है कि वह मेरा तन जलाकर उस राख को उस मार्ग पर बिछा दें जहाँ मेरे प्रिय पाँव रखेंगे।

विशेष :- आचार्य शुक्ल के अनुसार :- 'नागमती का वियोग वर्णन हिंदी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।'

(i) भाषा अवधी है किंतु इसका माधुर्य निराला है और यह संस्कृत की कोमलकांत पदावली पर अवलंबित नहीं।

(ii) नागमती की त्याग भावना की प्रतिबद्धता अत्यन्त उच्च है।

(iv) लोकपक्ष व त्यौहारों का वर्णन सूफियों की समन्वय चेतना का प्रमाण है।

V. Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) दसरत्थ के दानि-सिरोमनि राम, पुरान प्रसिद्ध सुन्यो जसु मैं।
नरनाग सुरासुर जाचक जो तुम सों मनभावत पायो न कैं।
'तुलसी' कर जोरि करै बिनती जो कृपा करि दीनदयाल सुनैं।
जेहि देह सनेह न रावरे सों अस देह धराइ कै जाय जियैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पद्य रामभक्त कवि 'तुलसीदास' द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से लिया गया है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश में तुलसीदास द्वारा भगवान राम के प्रति अनन्य भक्ति भावना ज्ञापित की गई है।

व्याख्या :- तुलसीदास कहते हैं कि भगवान राम दशरथ के पुत्र हैं, दानवीर हैं - यह बात सभी पुराणों आदि से मैंने सुनी है। नर हो या नाग, सुर हो या असुर, या कोई याचक ही हो - जो भी आपकी शरण में आया है, उसने मनभावन फल पाया है। तुलसी की भी हाथ जोड़कर आपसे विनती है कि आप मुझ पर कृपा कर मेरी देह का उद्धार कर मुझे अनन्य गति प्रदान करें।

काव्य सौन्दर्य (i) भाषा - ब्रजभाषा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) अलंकार - अनुप्रास का सुंदर संयोग।

(iii) भक्ति रस की सुंदर विवेचना।

विशेष (i) तुलसीदास द्वारा 'दास्य भक्ति' के द्वारा ईश्वर से प्रार्थना की गई है।

(ii) तुलसीदास की भक्ति अहैतुकी भक्ति के साथ-साथ सगुण भक्ति भी है।

(iii) भाषा सरल-सहज व सौंदर्यपूर्ण है।

कृपया इस स्थान से कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

सन्दर्भ प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक काल के राष्ट्रकवि 'मैथिली शरणगुप्त' जी की कालजयी रचना 'भारत-भारती' के वर्तमान खंड से ली गई हैं।

प्रसंग :- पंक्तियों में कवि ने कलाओं की वर्तमान दुर्दशा व उनके विकृत उद्देश्य का वर्णन करते हुए कर्त्तव्यविमुख जनमानस की वर्तमान स्थिति का विवेचन किया है।

व्याख्या :- गुप्त जी के अनुसार भारत के प्राचीन राजमहलों में सुकवि अपनी अमर कविताओं के द्वारा सभी को संस्कारित किया करते थे किंतु आज वे सभी नष्ट या पतित होकर इस हालत में है कि वहाँ सिर्फ उल्लू ही बोलते हैं।

गुप्त जी जनमानस की निद्रा दशा व चेतनशून्यता पर प्रकाश डालते हुए कहते

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, लाजपत मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है कि उनकी इसी प्रवृत्ति के कारण हमारी प्राचीन जाति का विनाश हुआ।

काव्य पक्ष :- गुप्त जी की उद्‌बोधनमूलक पंक्तियाँ वैसी ही हैं जैसी 'हाली' के 'मुसद्दस' की हैं।

- अतीत व वर्तमान में गहरा 'कंट्रास्ट' पैदा कर जनसमान्य को जाग्रत करने की चेष्टा दिखाई पड़ती है।

शिल्प पक्ष

(i) भाषा सरल, सहज व बोधगम्य खड़ी बोली है

(ii) 'इतिवृत्तात्मकता', व 'अभिधात्मकता' का गुण भाषा में दिखता है।

प्रासंगिकता - आज भी गुलामों का व्यापार हो रहा है, उस पर ये पंक्तियाँ सटीक बैठती हैं।

V. Good 6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) "कबीर की वाणी वह लता है जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई है।" इस मत के परिप्रेक्ष्य में कबीर के काव्य का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीर की भक्ति भावना पर अत्यन्त विवाद है। उनके इनकी भक्ति को स्वदेशी या विदेशी मानना, कि रहस्यवाद का प्रकार जैसे विवाद तो हैं किंतु योग व भक्ति के संश्लेषण से निर्मित उनकी कविता भी अनूठी है।

कबीर का समय 'योग' व 'भक्ति' के मध्य संघर्ष का समय था। जहाँ योगमार्ग कठिन व नीरस था वहीं भक्ति सहज व सरस। योगियों में अक्खड़ता व अमानिकता थी तो भक्तों में सहृदयता व भावुकता।

कबीर भी नाथ परंपरा में दीक्षित होने के कारण हठयोग में पारंगत थे। योग मार्ग ईश्वर के अस्तित्व को भीतर स्वीकारता है - 'जोई जोई पिण्डे सोई ब्रह्माण्डे'। इसके अलावा योगमार्ग कठिन साधना पर आधारित है। कबीर अनुभूतिशील व्यक्ति थे और साथ ही उनकी सामाजिक चेतना उन्हें प्रेरित करती थी कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

वे संसार से मुंह न मोडें। इसके अलावा योगियों ने ~~समयानंतरा~~ समयांतराल अपने आडंबर विकसित कर लिये थे जो कबीर को स्वीकार्य नहीं थे।

अन्ततः कबीर के ~~का~~ हठयोग में कुंडली-महाकुण्डलिनी मिलाप के बाद भी उनके विच्छेद हो जाना यह प्रमुख कारण था-

"गगना पवना दोनो बिनसै
कहँ गया जोग तुम्हारा।"

इसी कारण कबीर ने योगमार्ग छोड़ भक्ति का राह पकड़ा किंतु योग की अनेक विशेषताएँ उसके अंदर आ गई हैं-

"पकरि टेक कबीर भगति की, काजी रहै झख मारि।"

संयोग का प्रथम स्तर वहाँ दिखता है जहाँ वे ईश्वर को योग की तरह अंदर भी स्वीकार करते हैं तो भक्ति की तरह बाहर भी -

"भीतर कहूँ तो जगमग लाजै, बाहर कहूँ तो झूठा लौ।
बाहर भीतर सकल निरंतर, गुरु प्रतापै दीठा लौं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरा स्तर वहाँ है जहाँ वे अद्वैत व नाथों के प्रभाव में ईश्वर को निर्गुण व अद्वैत मानते हैं किंतु भक्ति के प्रभाव में उनका 'सगुणीकरण' कर देते हैं।

दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना (निर्गुण)
राम नाम का मरम है आना। राम

'हरि मोरा पिउ मैं हरि की बहुरिया।' (सगुणीकरण)

अन्य स्तर वहाँ दिखता है जहाँ वे भक्ति में योग-मार्ग की अस्वीकृति, प्रतिबद्धता का समावेश कर देते हैं। कबीर की भक्ति 'अजामिल की कथा की तरह' सहज नहीं है बल्कि ईश्वर प्राप्ति हेतु पूर्ण प्रतिबद्धता की माँग करती है-

"कबीर यह घर प्रेम का, खाला का घर नहीं।
सीस उतारे हाथि करि, सो घर पैसे माँहि।"

अंतिम स्तर वह है जहाँ कबीर भक्ति के अनेक रूपों का वर्णन अपने काव्य

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, लाजपत राय मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में करते हैं। उनमें सख्य, दास्य भक्ति प्रमुख है-

'कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाऊँ।' (दास्य)

'पारब्रह्म सों खेलता, जो सर जाव तो जाव' (सख्य)

इस प्रकार कबीर का व्यक्तित्व विशिष्ट है जो किसी भी धारा को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करता बल्कि उस पर अपनी अनुभूति की छाप लगाकर ही अपनाता है। योग व भक्ति का संयोग भी ऐसा ही उल्लेख है।

उत्तम

12½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'असाध्य वीणा' के आधार पर अज्ञेय की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्य-वीणा' की संवेदना के रूप में अज्ञेय ने अपना मौलिक काव्यशास्त्र तो रचा ही है, इसकी भाषा भी अज्ञेय के भाषायी प्रयोगों की सिद्धावस्था है।

अज्ञेय का कथन है - मैं उन लोगों में हूँ और ऐसे लोगों की संख्या दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही है जो भाषा का सम्मान करते हैं और अच्छी भाषा को अपने आप में एक सिद्धि मानते हैं।" इसी के अनुरूप असाध्यवीणा में भाषा का उच्च स्तर दिखता है।

(i) कुशल शब्द प्रयोग :- अज्ञेय शब्द शिल्पी हैं और शब्दों की मितव्ययता और तराश उनकी निम्न पंक्तियों में दिखाई देती है-

"आ गये प्रियंवद! केशकम्बली, गुफा गेह,
कृतकृत्य हुआ मैं तात, पधारे आप,
राजा ने दिया आसन, कहा, ×××
साध मेरे मन की आज पूरी होगी।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, लाजपत नगर, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) तद्भव शब्दावली :- अज्ञेय का गद्य संसार चिंतनप्रधान होने के कारण तत्समता को धारण करता है जबकि असाध्यवीणा में भावनाओं व अनुभूतियों का आधिक्य भाषा को तद्भव बना देता है -

"श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में,
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब कुछ को सौंप दिया था।"

किंतु कथ्य के अनुरूप तत्सम शब्दावली में भी भाषायी प्रयोग दिखाई देते हैं -

"अपने छायातप, वृष्टि पवन, पल्लव कुसुमों की लय पर,
अपने जीवन संचय को कर छंदयुक्त।"

(iii) देशज व ध्वन्यात्मक गुण :- अज्ञेय की भाषा में प्रसंगानुसार इन तत्वों का प्रयोग भी दिखता है।

महुए की आवाजें, वर्षा वर्षा बूंदों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

का टपकना हो, अन्न की सौंधी खुदबुद हो आदि प्रसंगों में ध्वन्यात्मकता का गुण दिखाई पड़ता है -

"बंधे समक्ष वन बंधुओं की नानाविध आतुर तृप्त पुकारें, गर्जन, धुर्घुर, चीक, ऊँक, हुक्का चिचियाहट।" (ध्वन्यात्मकता)

"किसी की नई बधु की सहमी सी पायल ध्वनि, किसी दूसरों की शिशु की किलकारी"। (देशज शब्द)

इस प्रकार अद्भुत भाषा, कुशल शब्द प्रयोग जैसे कारणों से अज्ञेय की गिनती कालिदास जैसे रचनाकारों में की जाती है

V. Good

9½ / 15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या करते हैं। क्या निराला की यह विशेषता राम की शक्तिपूजा में भी दृष्टिगत होती है? विवेचन करें। 15

निराला का काव्य विविधता का काव्य है। वे किसी भी काव्यधारा का अंधानुकरण नहीं करते बल्कि उस समय में अपने व्यक्तित्व के अनुरूप अपनी कविता में परिवर्तन करते चलते हैं।

शुरू के समय में 'जूही की कली' जैसी कविता के माध्यम से छायावादी व राष्ट्रवादी आंदोलन के मध्य वे कैशोर्य अनुभूतियों को व्यक्त करते हैं तो छायावादी समय में 'बादल राग' की कविताओं से निम्न-वर्गों के संघर्ष को व्यक्त कर बताते हैं कि केवल अपनी अनुभूति में रत्ना वंचित वर्ग के लिये कितना घातक है।

इसी प्रकार राम की शक्तिपूजा का समय स्वतंत्रता संघर्ष का समय था जब असहयोग, सविनय अवज्ञा जैसे आंदोलन विफल हो चुके थे व जनता के सामने अपनी

कृपया इस स्थान से कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता प्राप्ति का विकल्प ~~नहर~~ नहीं था। उस समय 'निराला' ने असत्य के खिलाफ खड़े अमर मिथक राम को लिया व इस कथा में निम्न परिवर्तनों के साथ उसे अपने युगानुकूल बना लिया-

(क) राम की समस्या है 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति'। किंतु हनुमान को 'शक्ति' से भी ताकतवर बताकर निराला यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय जनमानस के पास अत्यन्त शक्ति थी।

(ख) शक्ति का राम के वदन में लीन होना निराला के वाचिक नेतृत्व की खोज का परिणाम है।

(ग) शक्तिपूजा की विधि हठयोग आधारित कर निराला यह साबित करते हैं कि जनता की ~~अधोगामी~~ आंतरिक शक्ति को 'उर्ध्वगामी' बनाना ही समय की मांग है।

इस प्रकार निराला ने इस

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कविता में समयानुकूल प्रसंग चुनकर उसका विस्तार कर व्याख्या करते हैं।

आगे की 'कुकुरमुत्ता' जैसी कविता द्वारा प्रगतिवादियों की योग्यता पर चोट करना भी इस कथन को पुष्ट करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

4. (क) "नागार्जुन जनजीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।" विचार कीजिये। 20

नागार्जुन के बारे में नामवर सिंह ने कहा है कि - "नागार्जुन ही आधुनिक भारत में सच्चे जनकवि हैं।" अतः जनकवि होने के नाते उनका प्रेम भी जनमानस, धरती व मानवीय संबंधों के अनुरूप होगा।

नागार्जुन की कविता जनमानस को प्रेरित करने व संबोधित करने के उद्देश्य से लिखी गई है। इस हेतु वे विचारधारा को भी यांत्रिकता से न स्वीकारते हुए कहते हैं-

"जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊँ।
जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा क्यों हकलाऊँ।"

इसी के अनुरूप उनकी कविताएँ भी जनजीवन को संबोधित है। जहाँ अकाल और उसके बाद में अकाल की दुर्दशा में जनजीवन का वर्णन किया है तो 'हरिजनगाथा' जैसी कविता में दलित वर्गों के प्रति उनकी संवेदना दिखाई पड़ती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी सन्दर्भ में राजनीतिक व्यंग्यों के द्वारा वे जनमानस से जुड़ते हैं और तात्कालिक आपदा के समय राजनीतिक संवेदनहीनता को निम्न पंक्तियों से दर्शाते हैं-

"दलित गिरिजन भूखों मरते, हम डोलें वन-वन में,
तुम रेशम की साड़ी डाटे, उड़ती फिरो गगन में।"

इसी के अनुरूप धरती के सन्दर्भ में भी नागार्जुन अनूठे पुजारी हैं। उनका प्रेम सामान्य प्रकृति से है जिसका वे वस्तुनिष्ठ वर्णन करते हैं। वे धरती का वर्णन किसान भाव से करते हुए कहते हैं कि-

"अबकी बार मैंने जी भर देखी
सुनहरी पकी फसलों की मुस्कान।"

इसी प्रकार उनकी धरती में आभिजात्य तत्व नहीं बल्कि सामान्य जनजीवन के कटहल, भुट्टे, नेवला आदि हैं जिन्हें लाकर उनकी कविता समृद्ध होती है जैसे-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"अहा! कैसा सुंदर पका है यह कटहल,
अहा! कैसा महमह करता है यह कटहल।"

अंतिम स्तर पर जब वे मानवीय संबंधों पर वर्णन करते हैं तो उनका प्रेम उदात्त प्रेम नहीं बल्कि सामान्य जनजीवन का प्रेम है, जिसमें सहजता है, उच्च उपमाएँ नहीं—

"तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान
मृतक में भी डाल देगी जान।"

इसी प्रकार इस प्रेम का विरह भी सहज है जो पति-पत्नी के दूर रहने का वर्णन करता है—

"घोर निर्जन में परिस्थिति ने दिया है डाल
याद आता है तुम्हारा सिंदुर तिलकित भाल।"

साथ ही नागार्जुन ने निराला की सरोज-स्मृति की भाँति वात्सल्य का वर्णन किया है जो कि एक प्राइवेट बस ड्राइवर का अपनी 'पुत्री' को लेकर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

"ड्राइवर बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ,
सात साल की बेटी का पिता तो है,
सामने गियर के ऊपर,
हुक से लटका रक्खी है,
काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी॥"

इस प्रकार नागार्जुन का कविता संसार उन्हें जनजीवन से जोड़ता है और प्रकृति व सहज गृहस्थिक प्रेम का पुजारी घोषित करता है।

V. Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-भारती' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की भविष्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत-भारती कविता के माध्यम से गुप्त जी ने भारत के स्वर्णिम भविष्य पर प्रकाश डाला है। इसमें एक ओर तो उनका जन को उद्बोधन वर्णित है तो दूसरी ओर भारत के भविष्य की दिशा के निर्देश भी वे देते हैं।

गुप्त जी भविष्य में भारत को आर्थिक शक्ति सम्पन्न, कल-कारखानों युक्त बनाना चाहते हैं ताकि भारत का कच्चा माल विदेश न जाये, बल्कि भारत में कल-कारखानों के द्वारा वस्तुएँ बनने लगे।

"मेड इन' के बाद बस हो अब इंडिया हर कहीं।"

वैचारिकता के स्तर पर गुप्त जी आधुनिक ज्ञान से भारतीय जन-जीवन का परिचय कराना चाहते हैं व शिक्षा में विज्ञान को समाहित करना चाहते हैं-

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, लाजपत मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"साहब! यूरोपियन हिस्ट्री न अब हमें सिखलाइये,
बैलून की रचना करके कृपा दिखलाइये।"

तीसरे स्तर पर गुप्त जी साहित्य को नई दिशा प्रदान कर रीतिनालीन मानसिकता ग्रस्त कविता का खंडन करते हैं व भविष्य में उद्देश्यमूलक कविता की स्थापना को तरजीह देते हैं-

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये,
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिये।"

गुप्त जी चाहते हैं कि संपूर्ण भारतीयों को जोड़ने व आगे बढ़ाने के लिये एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है और उनके भविष्य में यह कार्य भी समाहित है-

"है निज भाषा हमारी नहीं,
जिसमें जान सकें हम विचार सब कहीं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अन्ततः गुप्त जी की भविष्य दृष्टि भारत के सब जन-मानस को एकीकृत कर व राष्ट्रीय भावना से जोड़कर भारत के हित में प्रयासरत बनाकर भारत को विकसित करने पर बल देती है-

"उठो दीनबंधो! भारत को पुनः अपनाइये,
भगवान भारत को फिर पुण्यभूमि बनाइये।"

इस प्रकार गुप्त जी की भविष्य दृष्टि में परिवर्तन पर बल, विज्ञान का विकास, राष्ट्रीयता की भावना व आर्थिक विकास का भाव समुचितः स्थित है।

V. Good 9½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान से प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'प्रगतिवादी जीवनमूल्यों में आस्था रखते हुए भी मुक्तिबोध 'लकीर के फकीर' नहीं हैं और अनुभवजन्य यथार्थ पर अधिक यकीन रखते हैं।' ब्रह्मराक्षस कविता के संदर्भ में इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध घोषित मार्क्सवादी कवि हैं और उनके सिद्धान्तों का प्रक्षेपण उनकी हर कविता में नज़र आता है। ब्रह्मराक्षस की मूल समस्या भी यही है कि उसका 'आत्मचेतस' सामन पूर्णतः 'विश्वचेतस' क्यूँ नहीं हो रहा है। यह वही भाव है जिसे मार्क्स ने 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का उत्तरदायित्व' कहा है।

किंतु मुक्तिबोध विचारधारा के खूँटे से बंधे कवि नहीं हैं बल्कि अपने अनुभवों से सैद्धांतिक नियमों में संशोधन करते हुए चलते हैं। ब्रह्मराक्षस की समस्या में 'व्यक्तित्व की भावना का संप्रेषण' करना इसी बात का द्योतक है।

मार्क्स के अनुसार व्यक्तित्व सामाजिक स्थितियों का उत्पाद मात्र है किंतु मुक्तिबोध ने ब्रह्मराक्षस के 'सजल उर शिष्य' के माध्यम से बताया है कि जिसमें व्यक्तित्व ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नहीं है वह सामाजिक क्रान्ति को कुछ नहीं दे सकता।

"मेरा उससे होता उन दिनों मिलन यदि,
तो व्यथा उसकी स्वयं जीकर मैं,
बताता उसे उस आंतरिकता का मूल्य।"

इसी प्रकार 'सजल-उर-शिष्य' के माध्यम से यह बताया है कि 'आत्मचेतस' का पूर्णतः 'विश्वचेतस' में रूपान्तरण संभव ही नहीं है। कम से कम दशमलव बिंदुओं तक तो आत्मचेतना बनी ही रहती है।

"...आत्म चेतस किंतु,
इस प्राणमय व्यक्तित्व में भी अनबन,
विश्व चेतस बे-बनाव।"

दूसरा संशोधन मुक्तिबोध ने इस स्तर पर किया है कि सजल-उर शिष्य के रूप में भावनाओं को महत्व दिया है क्योंकि बिना भावनाओं के विचार का कर्म में रूपान्तरण संभव नहीं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कविता में एक पेंटिंग के माध्यम से वे यह बताते हैं कि कोई भी विचारधारा सत्य नहीं है, चाहे वह मार्क्स ही क्यों न हो। ब्रह्मराक्षस के माध्यम से सभी विचारधाराओं को "सिद्ध-अन्त" कहा है-

"कि मार्क्स, एंजेल्स, रसेल, टॉयनबी---
सभी के सिद्ध-अन्तों का नया
व्याख्यान करता वह।"

इस प्रकार संवेदना के स्तर पर संशोधन के साथ-साथ मुक्तिबोध फैंटेसी जैसे शिल्प द्वारा भी प्राचीन मार्क्स व प्रगतिवादी विचारधारा की लकीर न पीटते हुए नज़र आते हैं।

Good 9/1

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) हमने एक दूसरा उपाय सोचा है, एडूकेशन की एक सेना बनाई जाय। कमेटी की फौज। अखबारों के शस्त्र और स्पीचों के गोले मारे जायँ। आप लोग क्या कहते हैं?

प्रस्तुत गद्यांश नवजागरण युग के प्रसिद्ध नाटक 'भारत-दुर्दशा' के पाँचवें अंक से लिया गया है। इसके नाटककार 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र' हैं।

पंक्तियों में एडिटर द्वारा भारत-दुर्दशा के सुधार हेतु सही व बेहतर उपायों को बताने का वर्णन हुआ है।

व्याख्या :- एडिटर कहता है कि भारत की आज जो दुर्दशा है उसका समाधान है कि हम शिक्षा की सेना तैयार करें और विभिन्न प्रकार की समितियों के द्वारा विचार-विमर्श करें। इसके अलावा अखबारों आदि के प्रयोग द्वारा शब्दों से आलोचना कर्म करें ताकि भारत का दोबारा से उदय हो।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, लाजपत मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शिल्प :- (i) भारतेन्दु ने तत्कालीन बुद्धिजीवियों पर व्यंग्य कर उनकी निष्क्रियता की आलोचना की है।

(ii) भारतेन्दु ने भारत की दुर्दशा के कारणों में जनता की संवेदनहीनता व ~~आलस्क~~ आलस्य को वर्णित किया है जो इन पंक्तियों में दिख रहा है।

भाषा (i) हिन्दुस्तानी भाषा के साथ प्रसंगानुकूल भाषा।
- एडिटर का कथन है इसलिए अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग।

(ii) व्यंग्य क्षमता जबरदस्त है।

10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) जो तुमसे भय करता है, उससे तुम भी भय करते हो। शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित। भय का कारण होने से भय अवश्य होगा। निर्भय वही है, जो भय के कारणों से मुक्त है। तुम्हारी शक्ति से यदि दूसरा भयभीत है तो उसका भयभीत रहना तुम्हारे भय का गुप्त बीज है। अनुकूल भूमि और ऋतु पाने से भय का यह बीज किसी भी समय अंकुरित हो सकता है। आर्य, ऐसी अवस्था में शक्ति अभय का नहीं, भय का ही कारण है। अन्य के भय का और अपने भय का भी।

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'यशपाल' के 'दिव्या' उपन्यास से ली गई हैं।

पंक्तियों में स्थविर चीवुक द्वारा प्रभुसेन को भय के संबंध में ज्ञान दिया जा रहा है।

व्याख्या :- स्थविर-चीवुक कहते हैं कि भय एक पारस्परिक अवधारणा है जो एक दूसरे के प्रति होती है। शक्तिशाली व्यक्ति वे नहीं होते जिनमें भय का अभाव होता है बल्कि वे होते हैं जो अपने भय पर विजय प्राप्त करते हैं। भय की धारणा कभी भी उपयुक्त परिस्थितियों पाकर उत्पन्न हो सकती है।

यदि तुमसे कोई भयभीत है तो यह भय तुम्हें भी कभी जकड़ सकता है। अतः

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताश्कंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

शक्ति पाकर भी भय को समाप्त नहीं किया जा सकता है

भाव पक्ष (i) पंक्तियों पर बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट है।

(ii) भय की सैद्धान्तिक व्याख्या की गई है।

(iii) शक्ति के साथ भय की आनुपातिकता की व्याख्या की गई है।

(iv) सूत्र शैली का प्रयोग -
"शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागृत।"

कला पक्ष :- भाषा सैद्धान्तिक व चिंतनप्रधान होने के कारण पद्यात्मक हो उठी है।

(ii) तत्सम किंतु सहज शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

Good

6½/10

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

सन्दर्भ प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध मार्क्सवादी उपन्यासकार 'यशपाल' के ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' से ली गई हैं।

प्रसंग :- राज्य प्राप्त होने पर एवं स्त्री से विवाह होने पर भी जब द्युसेन उदास रहता है तो उसका पिता पैस्थ उसे समझाने के लिये ये पंक्तियाँ कहता है।

व्याख्या पैस्थ द्युसेन को समझाता है कि जीवन का मुख्य उद्देश्य नारी प्राप्त करना नहीं बल्कि अन्य प्रकार से सफलता अर्जित करना है। नारी केवल साधन व भोग्य है जो साध्य के मार्ग की वस्तु है। यदि कोई व्यक्ति किसी नारी पर अपना बलिदान करना चाहता है तो इसका अर्थ है उसका मस्तिष्क भ्रष्ट हो चुका है और उस मनुष्य का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

पतन होना निश्चित है।

विशेष :- (i) नारी दुर्दशा पर रचित इस उपन्यास की ये पंक्तियाँ "नारी के वस्तुकरण" को प्रतिबिम्बित करती है।

(ii) प्रेस्य की पितृसत्तात्मकता पूरित मानसिकता द्रष्टव्य है।

शिल्प पक्ष (i) ऐतिहासिक उपन्यास में भाषा थोड़ी क्लिष्ट होने के साथ-साथ तत्सम-प्रधान है।

(ii) चाणक्य की सूक्ति 'अंतरपाठ्यता' का गुण पैदा करती है।

(iii) गद्य होने पर भी भाषा कविता जैसी लय लिए हुए है।

Good A

6½
10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदारता, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश हिंदी के पुरोधा निबंधकार आचार्य 'रामचन्द्र शुक्ल' के निबंध संग्रह 'चिंतामणि' के काव्यशास्त्रीय निबंध 'कविता क्या है' से उद्धृत है।

गद्यांश में कविता के महत्व और कविता व कर्म के संयोग के प्रभावों का विवेचन किया गया है।

आचार्य शुक्ल कविता के महत्व पर विचार करते हुए कहते हैं कि कविता जैसी कला केवल सौंदर्य व शिल्प तक सीमित न होकर व्यक्ति के भाव-जगत का विस्तार कर उसे कर्म हेतु प्रेरित भी करती है।

कविता द्वारा केवल मनुष्य को प्राकृतिक वस्तुओं का ही बोध नहीं होता, बल्कि कविता तो मनुष्यों में भावनात्मक प्रेरणा उत्पन्न कर उनमें मूल्यों का संचार

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, लाजपत मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कर उन्हें कर्म की ओर मोड़ देती है।

भाव पक्ष :- (i) कविता की प्रासंगिकता पर चर्चा की गई है।

(ii) आज के विज्ञान व औद्योगिक युग में ये पंक्तियाँ और भी प्रासंगिक हैं।

(iii) ऐसी ही चर्चा प्रसाद के नाटक 'स्कंदगुप्त' में मातृगुप्त द्वारा की गई है।

शिल्प पक्ष :- (i) विचारात्मक निबंध पंक्तियाँ।

(ii) वैज्ञानिक शैली में 'एक-एक पैरा में विचार दम-दबाकर कसे गये हैं।'

(iii) तत्सम शब्दावली का प्रयोग।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी के प्रसिद्ध नाटककार 'जयशंकर प्रसाद' के राष्ट्रीय चेतना संपन्न ऐतिहासिक नाटक 'स्कंदगुप्त' से ली गई हैं।

पंक्तियों में देवसेना द्वारा विश्व के प्रत्येक कण-कण में संगीत होने की कल्पना के साथ-साथ ईश्वर के अस्तित्व की व्याख्या की गई है।

व्याख्या :- देवसेना कहती है कि संगीत की उत्पत्ति में विश्व की प्रत्येक ध्वनि का योगदान है। मनुष्य यदि इसे समझे तो वह पायेगा कि हर एक परमाणु, अणु, हरी पत्ती आदि सभी जीवंत व चलायमान हैं व सृष्टि के मधुर संगीत उत्पत्ति में अपना योगदान देते हैं। यदि मनुष्य पक्षियों की मधुर वाणियों को उस संपूर्ण सत्ता का प्रतीक मानकर उससे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सामंजस्य स्थापित करे तो उसकी बेसुरी राग भी सुरीली हो सकती है।

विशेष :- (i) प्रसाद बहुदर्शन अध्येता थे व इन पंक्तियों पर 'नव्यवेदांत दर्शन' का स्पष्ट प्रभाव दिखता है।

(ii) कामायनी में भी 'कर रही लीलामय महापिति सजग सी हुई ~~अग्नि~~ व्यस्त' जैसी पंक्तियों के माध्यम से यही संदेश दिया गया है।

(iii) अज्ञेय की कविता 'असाध्यवीणा' में भी संपूर्ण स्वरों का उद्गम बिन्दु महासमष्टि को बताया गया है।

भाषा :- तत्सम व लयात्मक।
(ii) ध्वनियों का सौंदर्य देखते ही बनता है।

6½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

7. (क) 'मैला आँचल में डॉ. प्रशांत का चरित्र लेखक के सपनों एवं आदर्शों का प्रतीक बनकर उपस्थित हुआ है और इस कारण उसकी विश्वसनीयता खंडित हो गई है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में डॉ. प्रशांत के चरित्र का अवलोकन कीजिये। 20

मैला आँचल उपन्यास का सबसे क्रान्तिकारी पक्ष यह है कि इसमें किसी भी चरित्र को नायक का दर्जा दे पाना संभव नहीं है। आंचलिक उपन्यास होने के नाते अंचल का नायकत्व ही हमारे सामने उभरकर आता है

किंतु अंचल के बाद जो चरित्र सबसे अधिक प्रभावित करता है वह 'डॉ॰ प्रशान्त' का चरित्र ही है। यहाँ चरित्र के संबंध में निम्न बातें दर्शनीय है-

Good

(क) प्रशान्त का चरित्र आदर्शवादी चरित्र है जो बिना द्वन्द्व व अवगुणों के नज़र आता है।

(ख) सेवा-भावना, परोपकार, धन का लालच न होना जैसी विशेषताएँ इस चरित्र में समाहित है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) विदेश जाकर सफल होने के बजाय यहाँ पिछड़े वर्गों का सेवा का उद्देश्य डॉ० प्रशान्त रखता है। अन्त में वह कहता भी है- "मैं साधना करूँगा। ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले। कम से कम एक गाँव के कुछ प्राणियों के ओठों पर मुस्कुराहट ला सकूँ।"

उपर्युक्त विशेषताओं के बावजूद आलोचकों का मानना है कि ऐसा चरित्र मिलना संभव नहीं है और लेखक ने अपने आदर्शों के प्रक्षेपण हेतु इस चरित्र का सृजन किया है।

सतही तौर पर देखने पर यह प्रतीत हो भी सकता है किंतु सूक्ष्म नज़र दौड़ाने पर निम्न बातें सोची जा सकती हैं-

(क) डॉ० प्रशान्त के चरित्र में ये गुण उसकी परवरिश के परिणाम भी हो सकते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) भले ही सुलभ यथार्थ के रूप में वैसा चरित्र न दिखे किंतु दुर्लभ यथार्थ तो सच है ही। भारत में स्वतंत्रता संग्राम के नेता हों या कलाम जी जैसे वैज्ञानिक-सभी इन दुर्लभ यथार्थों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

(ग) रेणु ने अपनी भूमिका की प्रतिज्ञा- "इसमें फूल भी है, शूल भी, ~~चंदन भी है~~ धूल भी है गुलाब भी, चंदन भी है, कीचड़ भी---।" को पूर्णतः निभाया है। बावनदास जैसे आदर्श गाँधीवादी चरित्र की 'दुलारचंद कापरा' द्वारा हत्या करवाना इसका प्रमाण है।

(घ) चौथे स्तर पर यदि रेणु ने चलित्तर कर्मकार, दुलारचंद कापरा जैसे खलनायक प्रवृत्ति के चरित्र भी रखे हैं तो डॉ॰ प्रशान्त जैसा चरित्र में समाज में पाया जा सकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस प्रकार यह चरित्र उपन्यास के यथार्थ का क्षरण नहीं करता, न ही यह लेखक के आदर्शों का प्रतीक है। लेखक चाहते थे डॉ. प्रशान्त के माध्यम से गाँव की तरक्की का द्वार पैदा कर सकते थे। किंतु रेणु की तटस्थता का प्रमाण है कि ऐसा नहीं हुआ है।

Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दलित-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का अनुशीलन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोई भी रचना समय बदलने के साथ नये दृष्टिकोणों में नये अर्थ उत्पन्न करती है। प्रेमचन्द का कालजयी उपन्यास गोदान भी समकालीन विमर्शों में चर्चा का पात्र है।

दलित-विमर्श के चिंतकों ने प्रेमचन्द की कहानियों यथा- बूढ़ी काकी, कफन आदि पर दलित-विरोधी होने के आरोप लगाये हैं। ऐसे ही आरोप रंगभूमि व गोदान पर भी हैं।

प्रथम आक्षेप जातिसूचक शब्दों का प्रयोग (व्यक्ति को नीचा दिखाने के संदर्भ में करना) करने से है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"रूपा ने अंगुली मटकाते हुए कहा:-
ऐ राम सोना चमार! ऐ राम सोना चमार!"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दूसरा स्तर वहाँ दिखता है जहाँ पंडित दातादीन निम्न जाति के प्रति पूर्वाग्रह से भरे नज़र आते हैं। एक जगह वे कहते हैं-

'नीची जाति! जहाँ भरपेट खाना खाया और टेढ़े चले। इसी से तो सास्त्रों में कहा है- ~~नीच~~ जात लतियाए अच्छा।"

वस्तुत: दोनों आक्षेपों के जवाब में कहा जा सकता है कि रूपा के माध्यम से प्रेमचन्द बताना चाहते हैं कि बच्चों की सामाजीकरण की प्रक्रिया में किस प्रकार जाति भावना भर दी जाती है।

पंडित दातादीन के माध्यम से उच्च जातियों के दलित विरोधी मानसिकता दर्शायी है जो कि समाज का कड़वा यथार्थ तो है ही।

यहाँ तक कि कुछ प्रसंगों में प्रेमचन्द दलित

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइंस, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्ग के साथ खड़े नज़र आते हैं। सिलिया के परिवार की विद्रोही चेतना हो या 'अन्तर्जातीय विवाह का समाधान' - दोनों स्तरों पर प्रेमचन्द ने एक ओर तो दलितों के शोषण के भयावह परिणाम का उल्लेख किया है तो दूसरी ओर दलित समस्या का समाधान भी पेश किया है।

इस प्रकार प्रेमचन्द ने गोदान में यथार्थ का वर्णन किया है और साथ ही दलितों के प्रति संवेदना व उनकी समस्या के समाधान पर भी लेखनी चलाई है

9/15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की संवेदना पर विचार कीजिये।

1931 में रचित प्रेमचंद की ~~यह~~ कहानी ईदगाह वस्तुतः एक बालक व उसकी बूढ़ी दादी की कहानी है जो बाल मनोविज्ञान जैसे विषय के साथ-साथ अन्य विषयों पर भी प्रकाश डालती है।

कहानी का प्रथम विषय यह है कि किस प्रकार यदि एक बच्चे से उसका बचपन छीना जाता है या उस पर जिम्मेदारियाँ लाद दी जाती हैं तो अभावों के कारण बच्चे का वयस्कों की भाँति व्यवहार हो जाता है। जैसा कि प्रेमचन्द ने लिखा है-

" बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था और बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। "

कहानी में प्रेमचन्द ईदगाह व नमाज के प्रतीक के माध्यम से 'कंट्रास्ट' उत्पन्न कर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

दर्शाते हैं कि किस प्रकार विषमतामूलक समाज के कारण उच्च वर्ग व निम्न वर्ग में अंतराल पैदा होता है जो निम्न-वर्ग के बच्चों की सहजता छीन लेता है। हामिद का चिमटा खरीदना उसका बड़प्पन है किंतु व्यवस्था के मुँह पर तमाचा है।

तीसरे विषय के रूप में प्रेमचन्द ने बच्चों की बातचीत के माध्यम से व्यवस्था की कुरीतियों को उजागर किया है।

"ये कानिसिटबल पहरा देते हैं? अजी तभी तुम बहुत जानते हो। अजी हुजूर! यही कानिसिटिबल चोरी कराते हैं।" (पुलिस का भ्रष्टाचार)

इसी कहानी में प्रेमचन्द ने ईदगाह की तैयारी के माध्यम से भारतीय समाज में निहित सामंजस्य, समरसता व पारस्परिकता का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है-

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"ईदगाह जाने की तैयारी हो रही है। किसी के कुरते में बटन नहीं है। पड़ोस के घर से सूई धागा लेने दौड़ा जा रहा है।"

इस प्रकार प्रेमचन्द ने ईदगाह कहानी में भारतीय समाज से लेकर बाल मनोविज्ञान का सुंदर चित्र अंकित किया है जो अद्भुतपूर्व है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation